
पूजा-गीत

PRINTED AND PUBLISHED BY K. MITTRA, AT
THE INDIAN PRESS, LIMITED, ALLAHABAD



बापू के अनन्य भक्त

बंधुवर

घनश्यामदास जी बिड़ला

के

कर कमलों में

परिचय

जब जीवन-साहित्य निकला तब यह विचार था कि इसमें कविता व कहानी को स्थान न देंगे। दूसरे पत्रों में इनकी भरमार रहती ही है। फिर जीवन-साहित्य का छोटा कलेवर इनसे बचाया जा सके तो अच्छा ही है। किन्तु, पहले अंक के लिए ही द्विवेदी जी की 'पूजा-गीत' कविता मिली व साथ ही कविता न छापने के निश्चय पर उलहना भी।

वन्दना के इन स्वरों में
एक स्वर मेरा मिला लो।

वंदिनी मा को न भूलो,
राग में जब मत्त झूलो,
अर्चना के रत्नकण में
एक कण मेरा मिला लो।

जब हृदय का तार बोले
शृङ्खला के बंद खोले,
हों जहाँ बलि शीश अगणित,
एक शिर मेरा मिला लो।

कहना नहीं होगा कि कविता छपी ही नहीं, बल्कि उसने भविष्य में 'जीवन-साहित्य' में कवितायें छापने का मार्ग भी खोल दिया। पूजा-गीत मुझे इतना पसन्द आया कि जब भक्ति, वंदना या उपासना की मन-स्थिति में होता हूँ तो—

वंदना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा मिला लो—

गुनगुनाने लगता हूँ।

द्विवेदी जी का कवि युग के प्रति वफादार है। जो कवि अपने आपके प्रति सच रहता है वह सबके प्रति सच्चा रहता है। सोहनलाल जी को मैं युग-कवि मानता हूँ।

महादेवी, 'नवीन', 'प्रेमी' की पीड़ा और व्यथा व्यक्ति में से जन्म पाकर सामाजिक बनती है, अतएव उसमें एक व्यक्तिगत व रागात्मक अपील रहती है। सोहनलाल जी की व्यथा का उद्गम राष्ट्र से होता है, उसकी अभिव्यक्ति भावात्मक तथा विधायक होती है।

यदि प्रसन्नता, सजीवता, प्रभावोत्पादकता कविता का प्रधान गुण हो, तो सोहनलाल जी इसमें लाजवाब हैं।

—हरिभाऊ उपाध्याय

१

वीणापाणि ! मुझे वर दो !

गाऊँ मैं झूमे जग मद में,
बहे तिमिर किरणों के नद में,
मेरे उर के तारों में वे
दो कड़ियाँ धर दो !

गाऊँ पावन गीत मनोरम,
सत्य खिले, हो दूर मोह-भ्रम,
हो जीवन-पथ ज्योतिर्मय
इतनी करुणा कर दो !

गाऊँ युग की नवल प्रभाती,

निशा चले मृदु चरण छिपाती;

हो मङ्गल-प्रभात अवनी में

वह मङ्गल स्वर दो।

वीणापाणि ! मुझे वर दो !

२

अंतरतम में ज्योति भरो हे !

जहाँ जहाँ नत मस्तक पाओ,
वहाँ वहाँ युग चरण बढ़ाओ,
मेरे मंगलमय ! दुर्बल पर
निज कर पल्लव सबल धरो हे !

अंतरतम में ज्योति भरो हे !

जहाँ जहाँ पर देखो कारा,
वहीं बहाओ करुणा-धारा,
बंधन मुक्त करो युग युग के
पाप-ताप अभिशाप हरो हे !

अंतरतम में ज्योति भरो हे !

३

अभय करो, अभय करो,
अभय करो हे!

काटो उर तिमिर बन्द,
खोलो नव ज्योति छन्द,
बिखरे नव बल मरन्द,

ज्योति भरो, शक्ति भरो,
भक्ति भरो हे!

उर में हो नई स्फूर्ति,
युग युग की मिले पूर्ति,
मन में हो मातृ-मूर्ति,

पाप हरो, ताप हरो,
शाप हरो हे!

४

अभय करो हे !

युग युग का जड़ प्रमाद,
छिन्न करो विष विषाद,
नव बल का दो प्रसाद,
निर्बल तन, निर्बल मन, ओज भरो हे !

अभय करो हे !

नयनों में तम अपार,
करुणा की किरण ढार,
खोल प्राण रुद्ध द्वार,

नूतन पथ, नूतन रथ, सूत्र धरो हे !

अभय करो हे !

शिर पर हो वरद हस्त,
क्यों फिर हो देश त्रस्त ?
नवकृति में सकल व्यस्त,
युग युग के बंधन चिर, अचिर हरो हे !

अभय करो हे !

५

जग-जीवन की दोपहरी में
शीतल छाँह बनो मेरे कवि !

श्रान्त पथिक पावे कुछ रसकरण,
सूख चलें मस्तक के श्रमकरण,
निरालम्ब के नव अवलम्बन,
करुणा बाँह बनो मेरे कवि !

पीड़ित प्राणों में बन गायन,
करो नींद मधु सुख का वर्षण,
वसुधा के जलते करण करण में,
अमृत-प्रवाह बनो मेरे कवि !

६

आज युग का राग गा पिक !

झरें पीले पत्र तरु के,
आज जागें भाग्य मरु के,
जीर्ण जग, इस भव पुरातन में
नवल निर्माण ला पिक !

गिरे युग का शीर्ण वल्कल,
रूढ़ियों का छत्र श्यामल,
खिलें सुख के सुमन सुंदर,
वह मधुर मलयज बहा पिक !

हिम तुषार-निपात भागे,
आज मधु का मर्म जागे,
मुक्ति मधुऋतु के मधुप के
छंद वंदनवार छा पिक !

आज युग का राग गा पिक !

७

मुक्ति की दात्री! तुम्हीं हो
मुक्ति की ही याचिनी?

अन्नपूर्णे! तुम क्षुधित हो?
फिर न क्यों मानस मथित हो?
देवि! यह दुर्दैव कैसा?
आज तुम रजवासिनी!

केश रूखे, धूलि लुंठित,
बनी वीणा - वाणि कुंठित,
राजराजेश्वरि! बनी हो
आज तुम कंगालिनी!

है फटा अंचल लहरता,
बन दरिद्र-ध्वजा फहरता,
रत्न आभरणे ! बनी तुम
आज पंथ भिखारिणी !

है कहाँ वह पूर्व महिमा ?
है कहाँ वह दर्प गरिमा ?
आदिशक्ति ! अशक्ति कैसी ?
पददलित अभिमानिनी !

अंग पर है गलित कंथा,
चल रही तुम विषम पंथा,
ओ शिवे ! यह वेश कैसा ?
अशिव चित्त विदारिणी !

स्तन्य पयमयि ! अमृत स्राविनि !
जननि ! उठ ओ जन्मदायिनि !
कोटि कोटि सपूत तेरे
तू नहीं हतभागिनी !

जाग ! माँ ! ओ जगद्धात्री !

तू दया की बन न पात्री !

ले त्रिशूल सतेज कर में,

ओ त्रिशूल विनाशिनी !

८

वंदिनी तव वंदना में
कौन सा मैं गीत गाऊँ ?

स्वर उठे मेरा गगन पर,
बने गुञ्जित ध्वनित मन पर,
कोटि कण्ठों में तुम्हारी
वेदना कैसे बजाऊँ ?

फिर, न कसकें क्रूर कड़ियाँ,
बनें शीतल जलन-घड़ियाँ,
प्राण का चन्दन तुम्हारे
किस चरण तल पर लगाऊँ ?

धूलि लुण्ठित हो न अलकें,
खिलें पा नवज्योति पलकें,
दुर्दिनों में भाग्य की
मधु चन्द्रिका कैसे खिलाऊँ ?

तुम उठो माँ ! पा नवल बल,
दीप्त हो फिर भाल उज्ज्वल !
इस निविड़ नीरव निशा में
किस उषा की रश्मि लाऊँ ?

चंदिनी तव वंदना में
कौन सा मैं गीत गाऊँ ?

९

लौटो आज प्रवासी !

मधुपी बने न झूमो बन में,
मधु घोलो मत जगजीवन में,
आकुल नयन हेरते तुमको
दूर न हो अधिवासी !

लौटो आज प्रवासी !

क्यों तुम भूले अपनेपन को ?
क्यों न देखते उर के व्रण को ?
क्या प्राणों की वंशी में
बजती है नहीं उदासी ?

लौटो आज प्रवासी !

अब किस रस में मुग्धमना हो ?
किस आसव में स्निग्धमना हो ?
भस्म हो रहा भवन तुम्हारा
अब मत बनो विलासी !

लौटो आज प्रवासी !

७

मुक्ति की दात्री ! तुम्हीं हो
मुक्ति की ही याचिनी ?

अन्नपूर्णे ! तुम क्षुधित हो ?
फिर न क्यों मानस मथित हो ?
देवि ! यह दुर्दैव कैसा ?
आज तुम रजवासिनी !

केश रूखे, धूलि लुंठित,
बनी वीणा - वाणि कुंठित,
राजराजेश्वरि ! बनी हो
आज तुम कंगालिनी !

बढ़ रहा है देश आज,
अशेष लेकर प्राण काया !

ओ निजस्वी !

आज चल उस ओर—है
जिस ओर बलि चढ़ती जवानी,
रहे युग के भाल पर
तेरी अरुण जलती निशानी !

ओ यशस्वी !

११

इतना आज करो !

दो क्षण दो माँ के वंदन में,
दो कण दो माँ के अर्पन में,
जो अवशेष बचे, ले उसको,
धरा धाम वितरो !
इतना आज करो !

दो पग बढ़ो मातृ-मंदिर में
दो डग आओ, मातृ-अजिर में,
दो नयनों में व्यथित वंदिनी
के दो अश्रु भरो !
इतना आज करो !

१२

इतना मान रखो !

भूले रहे कनक काया में,
यौवन की मादक माया में,
जीवन के दो चार पलक तो,
रुक करके परखो !

अब तक भूले रहे देश को,
जननी के प्राणांत क्लेश को,
आज निहारो उसे नयन भर,
दर्शन सुधा चखो !

जिसने तुम्हें दिया यह जीवन,
किया उसे तुमने क्या अर्पण ?
उऋण हुए क्या माँ के ऋण से ?
अपनी कीर्ति लखो !

१३

तुम उस राह न जाओ !

जो जाती वैभव के गृह में,
सुख-संपति के कारागृह में,
बनो ग्रास के दास नहीं तुम
भले त्रास पाओ !

स्वर्ण और माणिक के कंकण,
बनते जहाँ प्रगति में बंधन,
रहो दिगंबर धूलि - धूसरित
रज में सो जाओ !

बनो दीन दुर्बल के अंचल,
बनो न तुम दुर्योधन के बल,
लाक्षागृह के बनो न स्रष्टा
युग-द्रष्टा आओ !

तुम उस राह न जाओ !

१४

जाग ! सोये देश !

आत्महंता ! अब न सो तू,
जागरण के बीज बो तू,
मर न बनकर भीरु, वर जय,

वीर का धर वेश !
जाग ! सोये देश !

सो रहे ओ देश मानी !
सो रही अपनी जवानी !
आज जीवन ज्योति तेरी

हो रही है शेष !
जाग ! सोये देश !

बिसुध ! बंधन में विवश है ?
केसरी होकर अवश है ?
जाग ! भर हुंकार, कड़ियाँ
छिन्न हों अवशेष !
जाग ! सोये देश !

दलित के अरमान जग हे !
विजय के बलिदान जग हे !
जाग ! मुक्ति प्रभात भव के
शेष हों सब क्लेश !
जाग ! सोये देश !

पूर्व के अपवर्ग जग हे,
एशिया के गर्व जग हे !
बुद्ध ईसा औ' मुहम्मद के
अमिट संदेश !
जाग ! सोये देश !

१५

अब जगोगे किस उषा में
जब जगाया तब न जागे !

नींद में सोते रहे तुम,
आत्मबल खोते रहे तुम,

प्रात आया, अब उठो तो !
सब सुनहले स्वप्न भागे !

काल ले सर्वस्व भागा,
है न घर में एक धागा,

नग्न तन, भयमग्न मन है,
भग्न गृह प्रासाद आगे।

उठो, फिर खँडहर सँवारो,
प्राण तनमन जन्म वारो,

आज नव निर्माण में दो
दान जो भी देश माँगे!

१६

ओ हठीले जाग !

आज पलकों से निराली
अलस निद्रा त्याग !

अब नहीं वे दिन सुनहले,
औ' रजत की रात,
अब न मधु-ऋतु, बह रही,
पतझड़ भरी सी वात;
आज धूसर ध्वंस में
बजता असीम विहाग !
ओ हठीले जाग !

बुझ गये हैं विभव के
वे भव्य भवन प्रदीप,
जल रहे हैं आज गृह में
व्यथा के शत दीप!
धुल गया है भाल से
वह पूर्व अरुण सुहाग!

ओ हठीले जाग!

आज प्राची में खिलीं
किरणें मदिर रमणीय,
ला रहीं संदेश नव,
बेला बनी कमनीय;
आज नव निर्माण का
छिड़ने लगा फिर राग!

ओ हठीले जाग!



१७

ओ जवानी ! जाग !

सो रही तू आज रानी,
सो रही मेरी निशानी,

सो न अब पगली, अरी
उठ ! अलस निद्रा त्याग !

जाग री उन्मादिनी ओ !
प्रणय-अंक-प्रमादिनी ओ !

उदयगिरि पर बज रहा है
आज भैरव राग,

अग्निरथ पर चढ़ रँगीली,
प्रलय पथ पर बढ़ हठीली,
जल रही होली निरंतर,
खेल जीवन-फाग ।

चल अमृत का पान कर ले,
अमरता में स्नान कर ले,
मातृ-भू के शुभ्र अंचल
का मिटा दे दाग !

ओ जवानी ! जाग !

१८

जाग ! जनगण !

आज प्रलय विषाण बाजे
काल पर दे ताल शत फण !
जाग ! जनगण !

जाग ! नवयुग के विधाता !
दीन दुर्बल दलित त्राता !

जाग ओ जनता जनार्दन !
हो छली का दम्भ मर्दन !
जाग ! जनगण !

जाग ! प्रलयंकर भयंकर !

जाग ! त्रिनयन ! जाग शंकर।

भस्म हो अभिशाप युग का

मुक्त हो गति रुद्ध जीवन !

जाग ! जनगण !

१९

डिग न रे मन !

आज आर्त विषण्ण दीना,
मातृ-मुख है कान्ति क्षीणा,
अन्न-धन-सर्वस्व हीना !
पूत ! आज सपूत बन तू
पोंछ रे माँ के नयन कण !
डिग न रे मन !

सजल नयन निहारती है,
विकल व्यथित पुकारती है,
बुझ रही अब आरती है,

प्राण का घृत दे अमृत हे !
बने ज्योतित मन्द जीवन !
डिग न रे मन !

कसकती हैं क्रूर कड़ियाँ,
सिसकती हैं प्रहर घड़ियाँ,
तोड़ दे रे लौह-लड़ियाँ,
पुरुष ! तव पुरुषत्व पर
है बज रही जंज़ीर झनझन !
डिग न रे मन !

२०

क्षण भर रुको पथिक अजान!

पिये-सी हो आज प्याली,
घिरी दृग में मदिर लाली,
सुन रहे हो मुग्ध होकर,
क्या इसीसे गान?

पलक पर हैं अलक बिखरी,
आज अभिनव कांति निखरी,
क्या न आता मातृभू का
कभी तुमको ध्यान?

किस तरह श्रृंगार वैभव,
फिर सुहाता वेश नवनव,
गलित अंचल देख माँ का
क्या न गलते प्राण ?

यदि यहीं के देशवासी,
तो न आज बनो विलासी,
मातृ-मन्दिर में चलो
है हो रहा आह्वान !

क्षण भर रुको पथिक अजान !

२१

जननि ! जन जन के हृदय की
आज तुम वीणा बजाओ !
जो युगों से आज सोये,
हैं सकल अपनत्व खोये,
आज मन मन में विजय की
कामना मधुमय जगाओ !
आज स्वर स्वर में तुम्हारी,
वन्दना हो चित्तहारी;
मुक्ति दो मा ! बन्धनों से
मुक्ति की सुखश्री खिलाओ !

२२

मातृ - मंदिर में चलो, प्रिय,
हो रही है आरती !

शंख - ध्वनि उठने लगी है,
दीप की लौ भी जगी है,
आज करुणा लिये वीणा
स्वयं ही झनकारती !

मातृ - मंदिर में चलो, प्रिय,
हो रही है आरती !

रही पहले की न गरिमा,
बंधनों में बँधी प्रतिमा;
आज सुषुमा भग्न, प्रतिमा
नग्न तुम्हें पुकारती !

मातृ - मंदिर में चलो, प्रिय,
हो रही है आरती !

अजिर में हो आज वंदन,
अचिर माँ के कटें बंधन,
कोटि कंठों में बजें, रणवाद्य,
बलि की भारती,

मातृ - मंदिर में चलो, प्रिय,
हो रही है आरती !

२३

जननी आज अर्ध-क्षत-वसना !
खुलती नहीं तुम्हारी रसना !

यह जीवन ही जीवन है यदि,
तो तुम अब न जियो !

कसा शृंखलाओं में मृदु तन,
आह ! दुसह है यह उत्पीड़न !

बहुत सह चुके असह व्यथा है
यह व्रण आज सियो !

कोटि कोटि तुम जिसके त्राता!
क्षुधित तृषित अ-वसन वह माता!

अमृत दान दो अमृत-पुत्र हे!
या ले गरल पियो!

२४

सुन सकोगे क्या कभी
मेरी व्यथा की रागिनी ?

जलन की ये विषम घड़ियाँ,
फिर कसेंगी बन न कड़ियाँ,

कोटि कंठों में बजेगी,
यह अमंद विहागिनी !

नयन में ढल आयेगा जल,
जायगा पाषाण उर गल,

मैं अभागिनि भी बनूँगी
क्या कभी बड़भागिनी ?

तुम सभी मिलकर चलोगे,
युगों के बंधन दलोगे,

फिर नहीं झनझन बजेगी
लौह की यह नागिनी !

२५

आज मैं किस ओर जाऊँ ?

इधर है रण का निमंत्रण,
उधर कर में प्रेम कंकण;
भ्रमित, चकित, जड़ित बना मन,
मैं किधर निज पग बढ़ाऊँ ?

मृत्यु आलिंगन इधर है,
अधर का चुंबन उधर है,
मधु भरे दोनों चषक हैं,
किन्हें प्राणों से लगाऊँ ?

त्याग दूँ क्या यह प्रलय पथ,
चलूँ चढ़ लूँ बढ़ प्रणय रथ,
इति बने यह द्वन्द्व का अथ,
मिलन में मंगल मनाऊँ ?

किन्तु, उधर पुकार आती,
विकल रव चीत्कार आती,
क्वणित बनती व्रणित छाती,
तब किसे कैसे भुलाऊँ ?

प्राण ! दो तुम भाल चंदन,
विदा दो, हो मातृ-वंदन,
शक्ति दो तुम भक्ति जागे,
मुक्ति-पथ पर शिर चढ़ाऊँ !
आज रण की ओर जाऊँ !

२६

आज कवि ! जग !

त्याग अन्तःपुर, निरख
ये जा रहे हैं कौन दृग ठग ?

ध्वज तिरंगा सुदृढ़ कर में
ध्यान किसका आज उर में ?

जा रहे ले गर्व नव,
हैं छा रहे कैसे अरुण पग ?

आज कवि ! जग !

किधर है रण, कौन है प्रण ?
मौन हो ये सह रहे व्रण !

आज विचलित कर न पाता
क्यों इन्हें शोणित भरा मग ?
आज कवि ! जग !

चल रही है कौन आँधी ?
क्या कहा ? जा रहे गांधी !

जागरण की कनक किरणें
कर रही हैं धरा जगमग !
आज कवि ! जग !

चलो मेरे कवि समर में,
क्या यहाँ सुनसान घर में ?

वहीं तान उठे तुम्हारी
बढ़े नव-बल पा सबल डग !
आज कवि ! जग !

२७

आज है रण का निमंत्रण !

कृषक ! अपने खेत छोड़ो,
चरणगति को आज मोड़ो,

चलो हल ले स्कंध में
औ' वृषभ भी हों साथ, ज्यों गण !

श्रमिक ! श्रम सब आज त्यागो,
किरण फूटी, उठो जागो !

राष्ट्र का खँडहर सँवरता
ले चलो तन, रक्त के कण !

सजग युग के तरुण जागो,
तेज तप के अरुण जागो,

आज तुम पर ही चला
अभियान यह तुम लो नियंत्रण ।

आज है दिन साधना का,
राष्ट्र की आराधना का,

धनी निर्धन, सबल निर्बल,
चलो सब लेकर समर्पण !

सैनिको ! लो शंख अपने,
खुलेंगे अब पंख अपने,

घिरे मेघ हटें गगन से,
आज वह ध्वनि करो वर्षण !

वैदिको ! होगी न हिंसा,
आज का व्रत है अहिंसा,

स्वत्व लो, अस्तित्व देकर,

पियो नव अमरत्व के कण !

आज है रण का निमंत्रण !

२८

आज तुम किस ओर ?

उधर धन-बल पर सकल
अन्याय बनते न्याय,

इधर दुर्बल पददलित
अगणित विकल असहाय;

उधर युग-शासक, इधर
युग युग दलित जनरोर !

आज तुम किस ओर ?

उधर दल-बल, सबल तोपें
भर रहीं हुंकार,

इधर अर्पित प्राण की
पड़ती न सुन झंकार;

इधर सब निःशस्त्र,
शस्त्रों का उधर रव घोर !

आज तुम किस ओर ?

उधर अत्याचार की है
रक्तमय तलवार,

इधर जननी के चरण में
जन्म शत बलिहार;

आज बल की ओर तुम,
या, आज बलि की ओर ?

आज तुम किस ओर ?

२६

जब विषम स्वर बज रहे हों
तब न निज स्वर मन्द कर हे !

बढ़ रहे हों चरण सम में,
वे न जा पहुँचे विषम में,

इन विवादी स्वरों की सब
मूर्च्छनायें बन्द कर हे !

छेड़ अपनी रागिनी तू,
चित्त प्राणोन्मादिनी तू,

दग्ध जीवन के क्षणों को
स्निग्ध नव मकरन्द कर हे!

सुने कोई नहीं तव रव,
चुप न रह, गा गीत नवनव,

रुक गई गति जिन उरों की
आज उनमें स्पंद भर हे!

बढ़ उधर, हो जिधर आँधी,
चढ़ उधर, हो जिधर गांधी,

वंदिनी के मुक्ति-पथ की
यातना आनन्दकर हे!

३०

देवता तुम राष्ट्र के, क्या भेंट
चरणों में चढ़ाऊँ ?

हम अभी कल सो रहे थे,
आत्म-गौरव खो रहे थे,
बन किरण तुमने जगाया, क्या सुमन-
सा खिल न जाऊँ ?

आत्म-बल तुमने जगाया,
प्राण का कल्मष भगाया,
ज्योतिमय ! किस ज्योति से मैं
आरती अपनी सजाऊँ ?

पा तुम्हारे ही इशारे,
बढ़ रहे हैं पग हमारे,
दो हमें बल युग चरण में,
युग चरण अपने बढ़ाऊँ !

नयन मन जीवन हमारे,
हो चुके कब के तुम्हारे,
यह समर्पित धन, समर्पण में,
कहाँ कब भेंट लाऊँ ?

मातृ-मन्दिर आज जगमग,
जागरण का पर्व पग पग,
वन्दना के गीत गाओ, मैं उसी में
स्वर मिलाऊँ !

ले चलो जयमाल तुम जब,
गूँथ लो उसमें मुझे तब,
माँ चरण में शरण पाकर,
आमरण मङ्गल मनाऊँ !

३१

आज युद्ध की बेला !

बुझे मशाल न, तेल डाल लो,
अस्त्र-शस्त्र अपने सँभाल लो,

हैं तोपें हुंकार भर रहीं,
बापू बढ़ा अकेला !

आज युद्ध की बेला !

कोटि कोटि मेरे सेनानी !
देखें तुममें कितना पानी ?

अंतिम विजय हार अपनी है,
है यह अंतिम खेला !

आज युद्ध की बेला !

३२

तुम जाओ, तुम्हें बधाई है!

मेरी जननी के सेनानी!
मेरे भारत के अभिमानी!

पहनो हथकड़ियाँ रण-कंकण
माँ देती तुम्हें विदाई है!

ओ सेनापति! नरनाहर हे!
माता के लाल जवाहर हे!

तुमको जाते यों देख
आज उन्मत्त बनी तरुणाई है!

आँखों के आँसू आज रुको,
तुम अडिग रहो नीचे न झुको,

मङ्गल बेला में बनो फूल
जा रहा युद्ध में भाई है।

तुम जाओ, तुम्हें बधाई है!

तुम कहीं कभी भी झुके नहीं,
तुम कहीं आज तक रुके नहीं,

वह तरल तिरंगा लहराता,
धरती ऊपर उठ आई है!

कब तक होगा यह देश मूक ?
होंगी अब कड़ियाँ टूक टूक,

यह हूक अचूक चुनौती बन
घर घर न्यौता दे आई है!

हम पीछे, तुम आगे आगे,
सरदार! चलो, जीवन जागे,

बापू के कुछ मस्तानों ने
सत्ता की नींव हिलाई है!

तुम जाओ, तुम्हें बधाई है!

३३

चलो चलो हे !

शंख बजा,
हव्य जला,
आहुति का
चक्र चला,
मन्द हो न
अग्निहोत्र,

प्राण ढलो हे !
चलो चलो हे !

मन्दिर में
साम गान,
आत्माहुति
बलिप्रदान,
बनो अरुण
यज्ञ शिखा,
जलो जलो हे !
चलो चलो हे !

दम्भी हों
आज ध्वस्त,
दुःख दैन्य
अस्त त्रस्त;
मुक्ति ऋचा
गाओ तुम,
तिमिर दलो हे !
चलो चलो हे !

३४

नवयुग की शङ्ख-ध्वनि पथ पर।

तुम कैसे बैठे निर्जन में ?
ले करके विषाद जीवन में,
क्या न रक्तकण कुछ यौवन में ?

चढ़ो प्रलय के रथ पर।

बच न सकोगे इन लपटों से,
महाकाल की इन झपटों से,
अत्याचार छद्म कपटों से,

मुड़ो न भय के अथ पर।

झंझा को झड़ को बढ़ झेला,
मेघों से बिजली से खेलो,
वज्र गिरे, छाती पर ले लो,

बढ़ो, मृत्यु को मथकर।

३५

आई फिर आहुति की बेला !

बैठो गृह में नहीं प्रवासी !
छोड़ो मन की सभी उदासी,

जननी की कातर पुकार पर
करो नहीं अवहेला !

आई फिर आहुति की बेला !

कुछ समिधायें शेष रही हैं,
तरुण अरुण क्या ज्वाल बही हैं,

यह निरग्नि बंदी जीवन अब
कब तक जाये झेला ?

आई फिर आहुति की बेला !

तुम भी अपनी हूति चढ़ाओ,
पूर्णाहुति दे यज्ञ बढ़ाओ,

तिल तिल दे दो दान हठीले !
'आज मुक्ति का मेला !

आई फिर आहुति की बेला !

३६

जागे जग में मंगल प्रभात !

करुणारुण उषा रँगे अंबर,
नीलोदधि पहने पीतांबर,

उज्ज्वल हिमाद्रि हो स्वर्णगात !

संकुचित कमल दल हो उदार,
विकसित हों पा मधु श्री अपार,

हों हरित प्रकृति के पात पात !

हो स्नेह स्निग्ध मानव का स्वर,
यह आत्ममिलन बन जाय अमर,

फिर, आवे कभी न दुखद रात!
जागे जग में मंगल प्रभात!

३७

जय जय निर्भय हे !
जय जय जय जय हे !

आत्म नियंता, आत्म तपस्वी,
सत्य सबल, दुर्भेद्य मनस्वी,
रण-प्रण-व्रण-मय, अमर यशस्वी,
बलमय, बलिमय हे !
जय जय जय जय हे !

दीन दलित जनगण के त्राता,
मृत हत जीवन जन्म विधाता,
जय जय भारत भाग्य विधाता !

युग युग अक्षय हे !
जय जय निर्भय हे !

शोषित पीड़ित जन के नायक,
नवयुग, नवजग, राष्ट्र विधायक,
महामुक्ति के कर्मठ गायक !

भव अरुणोदय हे !
जय जय निर्भय हे !

३८

जीवन हो वरदान।

प्रतिपल सुन्दर हो, सुखकर हो,
ज्ञान मुखर हो, कर्म मुखर हो,

रहे आत्मसम्मान।

अविचल प्रण हो, अविरल रण हो,
यश बनता निज तन का व्रण हो,

प्रिय हो निज बलिदान।

बड़ी साध हो, गति अबाध हो,
अपनी पूर्णाहुति अगाध हो,

फल का रहे न ध्यान।

३६

फिर भी हो न निराश, राही !

कोई पथ में रहें न साथी,
जिनसे बड़ी बड़ी आशा थी,
आज अकेले ही चल, भर बल,

बन तू स्वयं प्रकाश, राही !

बिजली चमके, झंझा गरजे,
मेघ वज्र रव करके बरजे,
डिग न तनिक भी, अडिग चला चल,

होगा दुर्दिन नाश, राही !

द्वार रुद्ध हो, घोर निराशा,
त्याग नहीं मन की चिर-आशा,
विमुख लौट कर भी न कभी भी,

कर विश्वास विनाश, राही !
फिर भी हो न निराश, राही !

४०

कल है मेरी बार, प्रवासी !

दूर देश में जाना होगा,
जहाँ न प्रतिदिन आना होगा,

लौह कपाटों से रहते हैं
बन्द जहाँ के द्वार, प्रवासी !

आज करो मत यह आयोजन,
पुष्पहार, अर्चन, अभिनन्दन,

करो कामना झेलूँ सुख से,
जो हों कठिन प्रहार, प्रवासी !

मोह करो मत दृग जल ढारो,
क्या पवित्र कर्त्तव्य विचारो,

देखो—धूलि-धूसरित माँ है
बहती दृग जल-धार, प्रवासी !

एक एक कर आना होगा,
तन मन प्राण चढ़ाना होगा,

सुन पड़ती क्या जंज़ीरों की
तुम्हें नहीं झनकार, प्रवासी ?

गये सभी अपने दीवाने,
वे आज़ादी के परवाने,

कैसे रुक सकता मैं बोलो ?
आती तीक्ष्ण पुकार, प्रवासी !

मिलना हो तो, तुम भी आना,
बिछुड़ों को मिल कंठ लगाना,

ख़ूब बनेगी मिल बैठेंगे
जब दीवाने चार, प्रवासी !

होगा सारा राग अधूरा,
नहीं करोगे यदि तुम पूरा,

एक साथ बजने ही होंगे
इन प्राणों के तार, प्रवासी !

मैं बड़भागी, तुम्हीं अभागे,
कहो नहीं यह मेरे आगे,

बन्दी सुखी, दुखी स्वतन्त्र है,
अब तुम पर सब भार, प्रवासी !

धीरज रखना, फिर आऊँगा,
जन्म जन्म तक मैं धाऊँगा,

जब तक जननी बनी वन्दिनी
कटें न बेड़ी तार, प्रवासी !

४१

स्वागत ! आज प्रवासी !

आये आज छिन्न कर कड़ियाँ,
युग युग की लोहे की लड़ियाँ,

गृह गृह मङ्गल दीप जल रहे
मन की मिटी उदासी !

आये कारागृह में तपकर,
मुक्ति मन्त्र निशिवासर जपकर,

पावन करो आज आँगन को
ओ माँ के संन्यासी !

पाकर तुमसे ही नरनाहर,
गिरे राष्ट्र उठते फिर ऊपर,

तरल तिरंगा लहराता फिर,
देख तुम्हें गृहवासी।

तव चरणों की धूलि, तीर्थ करण,
बिखरा दो ये सिकता पावन,
हम मृतकों में जागे जीवन

ओ बलि के अभ्यासी !

स्वागत ! आज प्रवासी !

४२

उनको भी सद्बुद्धि राम दो।

भूले हैं जो नाम तुम्हारा,
भूले हैं जो धाम तुम्हारा,

उनको भी श्रद्धा अकाम दो।

भटक रहे मिथ्या माया में,
आत्म भूल, उलझे काया में,

उनको भी गतिमति प्रकाम दो।

व्यथित ग्रथित सुख, दुख से कातर,
ढरो आज उन पर करुणाकर!

उनको भी दुख में विराम दो।

४३

मङ्गलमय ! बल दो !

दुर्भर भार शीश पर हो अति,
रुकती हो, थक करके पदगति,
रुकें न चरण, मरण को वर लें

वह प्रण संबल दो ।
मङ्गलमय ! बल दो !

विश्व विमुख हो मेरे पथ में,
बढ़ूँ अभय हो निजगति रथ में,
टूटें चक्र, अस्थियाँ धर दूँ

प्रगति न दुर्बल दो।
मङ्गलमय ! बल दो !

आत्मबोध दो, आत्मज्ञान दो,
मानव को जीवन महान दो।
जान सकूँ अपने को वह प्रभु !

तप बल उज्ज्वल दो !
जीवन उज्ज्वल दो !

मङ्गलमय ! बल दो !

४४

क्या अब तुम फिर आ न सकोगे ?

जब जगती थी शोणित मग्ना,
चेतनता थी तिमिर निमग्ना,
गति मति प्रकृति बनी थी भग्ना,

तब तो तुम आये थे उत्सुक
क्या अब चरण बढ़ा न सकोगे ?

हिंसा नृत्य कर रही गृह गृह,
मृत्यु ग्रसित करती है रह रह,
रक्तधार उठती है बह बह,

फिर, आकुल आँखों में अब तुम
क्या दो आँसू ला न सकोगे ?'

फिर अशोक चढ़ते कलिंग पर,
शोणित से हो रहे खड्ग तर,
नर संहार मचा है बर्बर,

बनकर दारुण दाह हृदय में
क्या परिवर्तन ला न सकोगे ?'

है मानव में रही न ममता,
स्वप्न बनी प्राणों की समता,
फिर किसमें हो करुणा क्षमता ?

भरा विषमता से भव व्याकुल
क्या सम क्रम लौटा न सकोगे ?'

लौटा दो वह युग मङ्गलमय,
पशु-पक्षी सब जिसमें निर्भय,
जहाँ अहिंसा का अरुणोदय,

आत्म मिलन के सघन कुञ्ज हों
क्या वह मधुऋतु छा न सकोगे ?

आओ, एक बार फिर, आओ,
लाओ, वह मङ्गल दिन, लाओ,
गाओ, वही गीत फिर, गाओ,

आज कहो मत—वह करुणा का
महागान फिर गा न सकोगे ?

क्या अब तुम फिर आ न सकोगे ?

४५

करो इस भव में नव निर्माण !

प्राण में बजें एक ही तार,
स्नेह की हो पावन झंकार,
वचन में हो अमृत की धार,

भरो मृत हत में जीवन प्राण !

तिरोहित हो अन्तर का भाव,
प्रकट हो युग का पुण्य प्रभाव,
मनुज से मनुज न करे दुराव,

व्यथित मानवता पावे त्राण!

एकता, सब धर्मों का धर्म,
अहिंसा, हो जीवन का मर्म,
सत्य की सेवा हो सत्कर्म,

विश्व में हो मंगल कल्याण!

४६

है सभी घट में रमा वह
फिर कलह की बात क्या रे ?

सब मठों में एक प्रतिमा,
है सभी की एक महिमा,

दिव्य मधुमय प्रात में फिर
दुखमयी यह रात क्या रे ?

है सभी घट में रमा वह
फिर कलह की बात क्या रे ?

भ्रान्ति जग का मधुर पलना,
छिपी जिसमें क्षुद्र छलना,

प्राण पावन हैं सभी में
फिर अपावन गात क्या रे?

है सभी घट में रमा वह
फिर कलह की बात क्या रे?

४७

यह हठ और न ठानो !

मंदिर क्या हैं नहीं तुम्हारे ?
मसजिद जिनकी, क्या वे न्यारे ?
मठ विहार किसके हैं सारे ?

सभी तुम्हारी गौरव गरिमा
निज को पहचानो !

फिर लड़ते हो क्यों आपस में ?
कैसा बैर भरा नस नस में ?
तुम हो किस दानव के वश में ?

यह षड्यंत्र सिखाया किसने ?
तुम उसको जानो !

हिन्दू, मुसलिम, सिक्ख इसाई,
क्या न सभी हैं भाई भाई,
जन्मभूमि है सबकी माई !

क्यों न कोटि कंठों से मिल फिर
जय वितान तानो ?

४८

भव की व्यथा हरो !

भय छाया है देश देश में,
अस्त्र शस्त्र के छद्म वेश में,
खोलो बंद हृदय के लोचन

निर्मल दृष्टि करो !
भव की व्यथा हरो !

मानव आज बन रहे दानव,
भव में बसा रहे हैं गौरव,
विकसित करो संकुचित शतदल

मधुर मरंद भरो !
भव की व्यथा हरो !

राष्ट्र राष्ट्र में है संघर्षण,
करते सब शोणित का तर्पण,
व्यथित विश्व के मस्तक पर निज

करुणापाणि धरो !
भव की व्यथा हरो !

४६

कब होगा गृह गृह में मंगल ?

टूटेगी आँगन की कारा,
मुक्त बनेगा जनगण सारा,

जय जननी के महाघोष से
गूँजेगा अंबर अवनीतल !

नव उत्साह भरित मन होंगे,
नव निर्माण निरत जन होंगे,

नव चेतन के महाप्राण से
होगा दृग प्राणों में नव बल !

७

मुक्ति की दात्री ! तुम्हीं हो
मुक्ति की ही याचिनी ?

अन्नपूर्णे ! तुम क्षुधित हो ?
फिर न क्यों मानस मथित हो ?
देवि ! यह दुर्दैव कैसा ?
आज तुम रजवासिनी !

केश रूखे, धूलि लुंठित,
बनी वीणा - वाणि कुंठित,
राजराजेश्वरि ! बनी हो
आज तुम कंगालिनी !

५०

इस निविड़ नीरव निशा में
कब सुवर्ण प्रभात होगा ?

संकुचित सरसिज खिलेंगे,
सुरभि मधु गृह गृह मिलेंगे,

बह रहा अमृत लिये
मन का अमंद प्रपात होगा !

करेंगे खग विहग कलरव,
सजेंगे नव नवल उत्सव,

मुक्त मुक्त समीर में
खिलता सुनहला गात होगा !

झुकेंगी फल - भरी शाखें,
झुकेंगी मद - भरी आँखें,

यह प्रलय का दिन, प्रणय
की गोद में प्रणिपात होगा !

विभव की दूर्वा नवेली,
बनेगी अपनी सहेली,

आज के मरु में सुखद
नंदन सदन नवजात होगा !

वेदना के व्यथित तारे,
डूब कर जलनिधि किनारे,

फिर न आयेंगे कभी,
यह चिर तिमिर अज्ञात होगा !

नवकिरण की मदिर लाली,
भरेगी मधु रिक्त प्याली,

एक ही स्वर कोटि कंठों में
ध्वनित अवदात होगा !

विषम पथ ये सम बनेंगे,
सुखद जीवन क्रम बनेंगे,

जन्म नव, जीवन नवल,
नवदेश, नवयुग ज्ञात होगा !

५१

हैं अमर गायन तुम्हारे
और तुम हो चिर अमर कवि !

पा तुम्हारी पुण्य प्रतिमा !
जगी अपनी लुप्त गरिमा,

विश्व रजनी में उगे रवि !
गये नव आलोक भर कवि !

पा तुम्हारी ज्योति महिमा,
खिली प्राची में अरुणिमा,

पा तुम्हें हम पा गये
पावन पुरातन ऋषि प्रवर कवि !

एक बार विदेश के फिर,
मातृ पद पर हुए नत शिर,
कोटि कंठों में तुम्हारी
उठी गीताञ्जलि लहर कवि !

कौन वह जनपद अभागा ?
जो तुम्हें पाकर न जागा।
बंधनों की शृंखला में
बज रहे बन मुक्ति स्वर कवि !

५२

भाई महादेव देसाई !

बापू को तज करके पथ में,
चढ़कर अमरमृत्यु के रथ में,

मिला निमंत्रण, कहाँ चल पड़े ?
कुछ न विलम्ब लगाई !

अब बापू का हाथ बटाकर,
राष्ट्र-कार्य का भार घटा कर,

कौन आयु देगा बापू को
किसने वह गति पाई ?

कौन राष्ट्र-इतिहास लिखेगा ?
पावन राष्ट्र विकास लिखेगा,

वह लेखनी ले गये तुम तो
जो थी लिखने आई !

चले रिक्त कर गोद देश की !
क्या भूलोगे सुधि स्वदेश की ?

स्वतन्त्रता की ज्वाला बन कर
उर उर धधको भाई !

भाई महादेव देसाई !

५३

स्वागत ! तुलसी के आँगन में,
स्वागत ! कबीर के प्रांगण में !

स्वागत ! शंकर की काशी में,
विज्ञान - ज्ञान के उपवन में !

थे यहीं बुद्ध शंकर आये,
अपनी अपनी विभूति लाये,

उनकी सुधि बिखरी कण कण में !
स्वागत ! तुलसी के आँगन में ।

वह भी था कभी समय पावन,
काशी का गृह गृह ज्ञान सदन,

वैभव के उस खँडहर वन में!

स्वागत! तुलसी के आँगन में—

वह भी थीं काशी की घड़ियाँ,

थीं गृह गृह में माणिक मणियाँ,

हरिचन्द धनी उतरे प्रण में।

स्वागत! काशी के आँगन में—

गङ्गा के तट पर खड़ी खड़ी,

काशी सुधि करती घड़ी घड़ी,

वे स्वर्ग दिवस किस रज कण में?

स्वागत! तुलसी के आँगन में—

था भारतेन्दु का उदय यहीं,

थीं जिसकी किरणें अमृतमयी,

हिन्दी प्रभात के प्रांगण में!

स्वागत! तुलसी के आँगन में—

पा शक्ति विश्वविद्यालय की,
काशी प्राचीन उठी है जी,

ऋषियों के पुण्य तपोवन में।
स्वागत तुलसी के आँगन में—

दर्शन पुराण की ग्रंथि यहीं,
ऋषि सुलझाते थे बैठ कहीं,

इस उजड़े हुए तपोधन में!
स्वागत ! तुलसी के आँगन में—

हे आगत, स्वागत है आओ,
इस तीर्थ भूमि में सुख पाओ,

नव जीवन हो तन में मन में!
स्वागत ! तुलसी के आँगन में—

भारत जन-मानस विहारिणी,
है यहीं नागरी - प्रचारिणी,

शुभ भारत कला-निकेतन में।
स्वागत ! तुलसी के आँगन में—

कुसुमित हो आज मधुर आशा,
निज हिन्दी बने राष्ट्र-भाषा,

गूँजे स्वदेश के जन जन में।
स्वागत ! तुलसी के आँगन में—

५४

एक स्वर गाता रहा हूँ
एक ही स्वर गा रहा हूँ।

तुम अभी तक देश भूले,
बंदिनी के क्लेश भूले!

एक दुख पाता रहा हूँ
एक ही दुख पा रहा हूँ।

आज बंधन मुक्त हो तुम,
भाल चंदन युक्त हो तुम,

एक युग लाता रहा हूँ
एक ही युग ला रहा हूँ।

५५

आज सोये प्राण जागे !

देश के अरमान जागे !

सज चली अक्षोहिणी है,

बज चली रणकिंकिणी है,

कोटि कोटि चरण - धरण से

युगों के प्रस्थान जागे !

हटा अवगुंठन मुखों का,

मोह सम्मोहन सुखों का,

बढ़ी कन्यायें, बहन, माँ,
मधुर मङ्गल गान जागे !

है हिमाचल आज उन्नत,
देख निज गौरव समुन्नत,

आज जन में, जनपदों में,
उरों में उत्थान जागे !

नील सिंधु गरज रहा है,
बार बार बरज रहा है,

सावधान ! दिगन्त दिग्गज !
देश के अभिमान जागे !

हथकड़ी हैं खनखनातीं,
बेड़ियाँ हैं झनझनातीं,

आज बन्दी के स्वरों में
क्रान्ति के आह्वान जागे !

आज सोये प्राण जागे !

५६

जय जय जाग्रत हे !

जय जय भारत हे !

रण-प्रण-बद्ध-विपुल सेना दल,

उठे युगों के ज्यों गौरव-बल,

आज मुखर आँगन में हलचल,

जय प्रस्थान-निरत, जय ध्वनिमय,

गतिमति संयत हे !

जय जय जाग्रत हे !

जय जय भारत हे !

विस्मृत जातिभेद, भय-उद्भव,
विकसित-राष्ट्रप्रेम, नववैभव,
गलित पुरातन रूढ़ि, राज्य-रव,
जनगण - सागर - ऊर्द्ध्व -उच्छ्वसित
विस्तृत उन्नत हे !

जय जय भारत हे !
जय जय जाग्रत हे !

उदित भाग्य, दुर्भाग्य तिरोहित,
दृग मन नव आलोक निमज्जित,
सबल संगठन आज मुक्तिहित,
नवनिर्माण - निरत प्रतिपद, नव
बलिपथ उद्यत हे !

जय जय जाग्रत हे !
जय जय भारत हे !
जय जय तपरत हे !